International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 20-06-2023, Accepted: 07-07-2023, Published: 22-07-2023
Volume 5, Issue 2, 2023, Page No. 23-25

कमल किशोर गोयनका की आलोचना दृष्टि में भारतीयता

देवकांत सिंह
शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रेमचंद हिंदी गद्य साहित्य में एक ऐसे रचनाकार के रूप में जाने जाते है, जिनका नाम सिर्फ देश ही नहीं विदेशों में भी उसी सम्मान के साथ लिया जाता है। उनकी व्यापक रचनाशीलता ने देश, विदेश के पाठ्यक्रम में अपना स्थान बनाया है। प्रेमचंद की ख्याति कथा–सम्राट के रूप में की जाती है लेकिन चर्चायें कुछ कहानी तथा कुछ उपन्यासों तक ही सीमित रही है। इसी समस्या को निर्धारित कर कमल किशोर गोयनका प्रेमचंद के शोधकार्य और आलोचना में संलग्न हुए जो निरंतर आज 55 वर्षों से प्रेमचंद को सम्पूर्णता में प्रदर्शित करने के कार्य में लगे हुए है। कमल किशोर गोयनका पहले ऐसे आलोचक है जिन्होंने प्रेमचंद के साहित्य की आलोचना भारतीयता के आधार पर की है। इस आलेख में कमल किशोर गोयनका के आलोचना दृष्टि का मूल्यांकन किया गया है।

मूल शब्दः परम्परा, मूल्यांकन, आलोचना दृष्टि, आत्मबल, अस्मिता, जिजीविषा, विवाह–संस्था, सहनशीलता, अहिंसा, आदर्शवाद, भारतीयता

कमल किशोर गोयनका की आलोचना में भारतीय जीवन परम्परा से जुड़ाव दिखाई देता है, इसीलिए वह भारतीयता के तत्वों को प्रेमचंद के साहित्य में बखूबी देख पाते है। उनकी आलोचना की कसौटी में मर्यादा, शुचिता, न्याय, भारतीय जीवन–शैली, आत्मबल, सत्य, अहिंसा आदि तत्त्व मिलते है। कमल किशोर गोयनका प्रेमचंद के बारे में लिखते भी है–

"प्रेमचंद आधुनिकता के तत्त्वों को ग्रहण अवश्य करते हैं, लेकिन भारतीय मर्यादा, शुचिता, सेवा, संतोष, त्याग, बलिदान, अहिंसा आदि को अपनी कथाओं का अंग बनाते हैं। प्रेमचंद की मानुषी श्रेष्ठता एवं महानता पर पूरी आस्था है, लेकिन यह जीवन की यथार्थता की भूमि पर ही आधृत होती है। वे सदैव मनुष्य में देवत्त्व की खोज करते रहे और अपने आदर्शवाद को संस्कृति के शाश्वत मूल्यों के साथ जोड़ देते है और इस प्रकार उन्होंने भारतीयता को भारतीय मनुष्य की अस्मिता, जिजीविषा, उदात्तता एवं श्रेष्ठता का प्रतीक बना दिया है।"[1]

कमल किशोर गोयनका की आलोचना दृष्टि को रामविलास शर्मा ने विशुद्ध भारतीयतावादी कहा है। कमल किशोर गोयनका की दृष्टि में स्त्री के जीवन में परिवार और विवाह जैसी संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी दृष्टि में अगर स्त्री कुपथ की तरफ कदम बढ़ाएगी तो उसे खाई में गिरने से कोई बचा नहीं पायेगा। उसे अपने हर कदम का भुक्तभोगी होना ही पड़ेगा–

"भारतीय नारी जब तक एक पुरुष के प्रति निष्ठावान है, तथा घर–परिवार की रचना में मग्न है, तब तक यौन मुक्ति संभव नहीं है। इसी कारण पश्चिमी देशों में विवाह–संस्था नष्ट हो रही है, और घर–परिवार का स्वरूप भी एकदम बदल रहा है। नर और नारी की परस्पर पूरकता, समर्पण और विश्वास नष्ट हो रहा है तथा समाज तलाक, यौन–अपराधों, समलैंगिकता तथा एड्स–जैसी जानलेवा बीमारियों के जाल में फंसता जा रहा है।"[2]

यही स्थिति हमे 'श्रीरामचरितमानस' के उत्तरकाण्ड में भी दिखाई देती है कि स्त्री और पुरुष का मूल कर्तव्य क्या होना चाहिए। स्त्री और पुरुष दोनों को ही अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए और एक–दूसरे के प्रति एकनिष्ट होना चाहिए–

> "एकनारि ब्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी।।"[3]

भारतीय संस्कृति में विवाह पूर्व यौन संबंध बनाए जाने को अनुचित समझा जाता है। कमल किशोर गोयनका भी प्रेमचंद के साहित्य की आलोचना करते समय प्रेमचंद के स्त्री दृष्टि अर्थात् भारतीय मर्यादा और शुचिता को बनाये रखने का आग्रह देखते है। प्रेमचंद स्त्री के स्वछंद यौन–सम्बन्ध बनाये जाने की स्थिति का परिणाम 'मिस पद्मा' कहानी में दिखाते हैं। इसी स्थिति का परिणाम 'मिस पद्मा' कहानी में मिस पद्मा को भोगना पड़ता है, यह प्रेमचंद की अंतिम दिनों की कहानी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद अंत समय तक विवाह–संस्था का समर्थन करते है और मुक्त यौनाचार को दुर्व्यसन मानते है। कमल किशोर गोयनका लिखते है–

"ये अपने किसी नारी पात्र को इतना आधुनिक नहीं बनाना एवं देखना चाहते थे कि वह विवाह–पूर्व स्वछंद यौन–संबंध बनाये, किसी पर–पुरूष से यौन–संबंध स्थापित करे और अपनी उन्मुक्तता से तितली एवं स्वछंद नारी बनकर समाज को कुमार्ग पर ले जाये।"[4]

कमल किशोर गोयनका 'गबन' उपन्यास की आलोचना में पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को दोषी मानते है, और उसी आधार पर उसका विवेचन करते है। उनके अनुसार भारतीय शिक्षा प्रणाली पहले व्यक्ति को एक बेहतर मनुष्य बनाती है। उसमे सहनशीलता, आत्मत्याग, न्याय, अहिंसा, संतोष के गुणों से विद्यमान करती है, जबकि पश्चिमी सभ्यता व्यक्ति को स्वार्थ में बंधकर रहना सिखाती है। जहाँ व्यक्ति पहले अपना हित देखता है, वहाँ विश्व–बंधुत्व की भावना न होकर व्यक्तिवाद की भावना मुख्य हो जाती है। मनुष्य जब भोग–विलास के पीछे आँख बंद करके भागेगा तो वह प्रकृति और मनुषत्व दोनों के लिए ही खतरा हैं–

"'गबन' उपन्यास को समझने के लिए प्रेमचंद के अंग्रेजी–शिक्षा, छात्र और फैशन, विलासप्रियता और झूठा अभिमान, नौकरी में रिश्वत और 'गबन', शिक्षित नवयुवक और राष्ट्रीय आंदोलन, नगर एवं ग्रामीण जीवन आदि पर व्यक्त विचारों का मंथन करना अत्यावश्यक है।"[5]

'प्रेमाश्रम' उपन्यास में भी कमल किशोर गोयनका भारतीय जीवन मूल्य और पाश्चात्य जीवन मूल्य का संघर्ष ही मानते है–

"'प्रेमाश्रम' में ज्ञानशंकर पाश्चात्य जीवन मूल्यों की उपज है, और प्रेमशंकर भारतीय जीवन मूल्यों की। पश्चिमी जीवन–दृष्टि, संस्कार और मूल्यों की अनिष्टकारिता और भारतीय जीवनदृदृष्टि, संस्कार और मूल्यों की श्रेष्ठता दिखाना ही लेखक का उद्देश्य रहा है।"[6]

'प्रेमाश्रम' अपने युग की नवयुवक–पीढ़ी के उस यथार्थ को प्रस्तुत करता है, जो अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा पश्चिमी संस्कारों से अभिभूत

होकर भारत के प्राचीन जीवन–मूल्यों के विरुद्ध क्रियारत था। ज्ञानशंकर अपने परिवार से बस इसलिए अलग होना चाहता हैं क्योंकि उसकी विलासिता पूरी नहीं हो पा रही थी। जबकि इसी पीढ़ी में ऐसे युवक भी थे, जिन्होंने अंग्रेजी शिक्षा–दीक्षा लेने पर भी देशभक्ति और सामाजिक सेवा के महत्त्व को समझा था। प्रेमशंकर भी उन्हीं का प्रतीक है, और महात्मा गाँधी जैसे महानायक भी अंग्रेजी–शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् भारतीय मूल्यों को ही अपने जीवन का आधार बनाते है, और उसी से देश की सेवा करते है। कमल किशोर गोयनका मानते है कि 'प्रेमाश्रम' राजनीतिक संघर्ष की स्थिति में उत्पन्न हुआ उपन्यास न होकर भारतीय और पाश्चात्य जीवन मूल्यों का टकराव है। कमल किशोर गोयनका लिखते है–

"उपन्यास में ज्ञानशंकर, प्रेमशंकर आदि पात्रों का संघर्ष राजनीतिक नहीं है, बल्कि वह विशुद्ध रूप से जीवन–मूल्यों की लड़ाई है। अतः उपन्यास को राजनीतिक उपन्यास कहने का औचित्य दृष्टिगत नहीं होता। इस दृष्टि से यदि 'प्रेमाश्रम' को 'सांस्कृतिक संघर्ष को ध्वनित' करने वाला प्रथम उपन्यास कहा जाए, तो यही तर्कसंगत होगा।"[7]

भारतीय चिंतन परम्परा में कर्म–योग दर्शन का प्रभाव व्यापक है, जब कोई भी व्यक्ति पूरी निष्ठा से अपने कर्म में संलग्न रहता है, तो उसे उसका फल अवश्य मिलता है। भारतीय चिंतन परम्परा आशावादी है। ऐसे ही व्यक्ति सदैव आदर के पात्र होते है, जो बिना स्वार्थ के पुरे मनोयोग से कर्म करते है। 'गीता' के द्वितीय अध्याय में भी इसका वर्णन है–

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।"[8]

यह कर्म–दर्शन 'रंगभूमि' उपन्यास में देखने को मिलता है। जब सूरदास, मिठुआ के पूछने पर कहता है कि जितनी बार झोपड़ी जलाई जाएगी, उतनी बार उसे फिर बनायेंगे। कमल किशोर गोयनका कहते है–

"प्रेमचंद भागवत गीता के कर्म–योग के अनुयाई हैं और उनके पात्र भी कर्मशीलता के साथ जीते हैं। 'रंगभूमि' का सूरदास भारतीय कर्म–दर्शन का साक्षात् प्रमाण है।"[9]

कमल किशोर गोयनका की दृष्टि भारतीयता होने के कारण वह प्रेमचंद की 'कैदी' कहानी में हिंसा पर प्रेम की जीत को ही चरितार्थ करते है। भारतीय जीवन–दर्शन में अहिंसा को मानवता का प्रमुख लक्षण माना गया है। प्रेमचंद के साहित्य को पढ़कर यह आसानी से समझा जा सकता है कि प्रेमचंद अहिंसा को कितना महत्त्व देते है। 'श्रीरामचरितमानस' के उत्तरकांड में भी लिखा हुआ है–

"परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। परनिंदा सम अद्य न गरीसा।।"[10]

कमल किशोर गोयनका लिखते है –

"कैदी कहानी हिंसा पर प्रेम की जीत की कहानी है, और प्रेमचंद की इस धारणा में भी हिंसा से बुराई का प्रतिकार नहीं किया जा सकता।... महात्मा गाँधी की अहिंसा, सविनय अवज्ञा एवं असहयोग, समता, लोक–कल्याण आदि को अपनाते हुए परिवर्तन का मंत्र बनाया और जमींदारों, सामंतों एवं शासकों का हृदय परिवर्तन करके उन्हें भी जीवित रहने का अधिकार दिया।"[11]

कमल किशोर गोयनका आलोचना में प्रेमचंद के सेवा–भाव को दर्शाते है। सेवा–भाव भारतीयता का एक प्रमुख तत्त्व है। भारतीय जनमानस का विश्वास सेवा में निहित है, इसीलिए डॉ. चड्ढा के बेटे को सांप काट लेने पर बुढ़ा भगत रात में अपनी पत्नी से छुपकर चला जाता है। वहाँ उसके बेटे को ठीक करके वापस अपने यहाँ आ जाता है, वह किसी स्वार्थ वश नहीं जाता और न ही प्रतिक्रियावादी होकर उसके बेटे को मरने के लिए छोड़ता है। भगत भारतीय मूल्यों का प्रतिनिधि बनकर इस कार्य को अंजाम देता है। प्रेमचंद की पहली हिंदी कहानी 'परीक्षा' में भी दीनानाथ घायल होते हुए भी बूढ़े किसान का अनाज से भरी हुई गाड़ी को नाले से बाहर निकलवाता है। उसे पता भी नहीं होता कि यह बुढ़ा सुजान सिंह है। इस सेवा–भाव का उसे फल भी मिलता है। प्रेमचंद यह मानते है कि जिसके अन्दर सेवा–भाव, आत्मबल, साहस और दृढ संकल्प होगा वही व्यक्ति समाज को अच्छी तरह संचालित कर सकता है–

"आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई तअम्मुल न होगा कि जो पुरुष खुद जख्मी होने पर भी एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकाल कर नाले के ऊपर चढ़ा दे, उसके हृदय में साहस और आत्मबल और उदारता का संचार है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी नहीं सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाएँ, परंतु दया और धर्म के मार्ग से कभी नहीं हटेगा।"[12]

कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचंद की रचनाओं में निर्धारित मूल्यों को उनके लेखों से उद्धरित कर सारगर्भित आलोचना की तरफ पाठक का ध्यान आकर्षित किया है। जिसमे प्रेमचंद, देश की स्वाधीनता, निर्धनता एवं शोषण से मुक्ति, भारतीय संस्कृति की मानवीय तथा मर्यादाशील परम्पराओं की रक्षा, व्यक्ति और समाज का परिष्कार एवं उत्कर्ष, अन्धविश्वास, जड़ता तथा निष्क्रियता को भंजित करके जाग्रत करना, कर्मशीलता, स्वाभिमान, देशभक्त, सेवाव्रती समाज का निर्माण, आलोचना तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, भारत की मूल कृषि –संस्कृति की रक्षा तथा समाज में सामंजस्य एवं समन्वय की स्थापना करते हुए नजर आते है–

"प्रेमचंद ने कहानी का एक आधुनिक भारतीय शास्त्र दिया है, जो देश के स्वराज्य, राष्ट्रीय सांस्कृतिक नवजागरण और देशी अस्मिता और भारतीय आत्मा की रक्षा की प्रेरणा, चेतना और संकल्प से निर्मित हुआ था।"[13]

प्रेमचंद किसानों के जीवन के गाथाकार रहे है। इनके कथा साहित्य में किसानों के अभाव ग्रस्त जीवन तथा अभाव में भी जीवन की कला को जानते है। अपनी खुशियों को उन परिस्थिति में ढूँढना। प्रेमचंद के कथा साहित्य में यह पात्र उन्ही संस्कृतियों की रक्षा करते है, जिनमे भारत की आत्मा बसती है, इसी दृष्टि को कमल किशोर गोयनका जी अपने आलोचनात्मक पुस्तक द्वारा प्रदर्शित करना चाहते है। कमल किशोर गोयनका अपने 'प्रेमचंद' आलोचना पुस्तक में कृषि संस्कृति रक्षा की अनिवार्यता को स्पष्ट करते है।

"प्रेमचंद की कहानियों में कृषक एवं ग्राम्य जीवन संस्कृति के विविध पक्षों, रूपों का जीवंत एवं मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। इस चित्रण में इतनी अधिक वास्तविकता तथा घनीभूत संवेदनाएं है कि उन्हें कृषि जीवन और संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ कथाकार मान लिया गया है, क्योंकि उसमें उनकी आत्मा बसती है।"[14]

"प्रेमचंद में एक आध्यात्मिक उत्कर्ष है जो भौतिक जीवन में आत्मिक आनंद की अनुभूति कराकर पात्र को ऊँचा उठा देता है।"[15]

'ईदगाह' कहानी में जहाँ एक छोटा सा बालक अपने दादी के लिए चिमटा लाकर आत्मिक सुख का अनुभव करता है, वहीँ 'खेल' कहानी में फुन्दन खोमचे वाले के न आने पर खुद उसकी नक़ल कर और काल्पनिक मिठाई का स्वाद चखकर आत्मिक सुख की अनुभूति करता है। कमल किशोर गोयनका लिखते है–

"बच्चों के खेल में यह विचार तो है कि वे खोंमचे की अनुपस्थिति और धन के अभाव में भी कंकड़–पत्थरों से लड्डू, इमरती, बताशे आदि का आस्वाद ले सकते है। यह गरीबी और अभाव में पराजय का भाव नहीं है, बल्कि उसमे सुख और तृप्ति का आनंद है।"[16]

विवेकानंद और महात्मा गाँधी के विचारों की तरह ही प्रेमचंद भी गाँवों में बसना पसंद करते है। कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचंद द्वारा लिखे गए उपेन्द्रनाथ अश्क को पत्र द्वारा इस बात को प्रमाणिकता भी दी है कि प्रेमचंद अपने अंतिम दिनों में गांव में ही रहना चाहते थे। यही कारण है कि प्रेमचंद के पात्र शहरों से आकर गाँव में ही निवास करते है। 'प्रेमाश्रम' का प्रेमशंकर पात्र अमेरिका से आने के पश्चात् भी गाँव में निवास करना चाहता है। उन्हीं के साथ जीवन–जीने तथा उनके दुखों को दूर करने की कोशिश करना चाहता है। 'रंगभूमि' का सूरदास भी अपनी कृषि संस्कृति की रक्षा हेतू अपने जमीन के कब्जे का विरोध करता है। कमल किशोर गोयनका यह स्पष्ट करते है कि विवेकानंद और महत्मा गाँधी की तरह प्रेमचंद को भी ग्रामीण संस्कृति में भारतीय आत्मा के दर्शन होते है। वह लिखते है–

"स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी और प्रेमचंद का विश्वास है कि भारत गाँवों में ही बसता है। जिसमे किसानों का सुख–दुख, शुभ–अशुभ, यातना–उल्लास, शोषण–दमन एवं विद्रोह, अस्तित्व का संकट, अन्धविश्वास एवं रूढ़ियाँ, जिजीविषा एवं मानवीयता, निर्धनता में सज्जनता तथा नैतिकता, परिवार एवं मर्यादा तथा राष्ट्रीय आंदोलन की सहभागिता आदि मिलकर ग्रामीण जीवन का स्वरुप बनाते है। प्रेमचंद के शहरी पात्र भी गाँव आते है, और वहाँ उन्हें भारतीय आत्मा के दर्शन होते है।"[17]

प्रेमचंद का साहित्य भारतीय दृष्टिकोण निहित किये हुए है। उनके लिए सबसे पहले राष्ट्र था, उसके बाद अन्य विचार इसी राष्ट्रवादी विचारधारा के लिए, इनका कहानी संग्रह 'सोजे–वतन' को जप्त कर लिया गया और प्रेमचंद पर सिडीशन का चार्ज लगा दिया गया। 'सोजे–वतन' कहानी संग्रह में एक कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' है, जिसमे नायिका दिलफरेब नायक दिलफ़िगार को दुनिया का सबसे अनमोल रत्न लाने के लिए कहती है। जब नायक एक देशभक्त सैनिक का खून ले जाता है तो नायिका के लिए वही दुनिया का सबसे अनमोल रत्न होता है क्योंकि वह राष्ट्र के लिए किया गया समर्पित, खून का आखिरी कतरा होता है।

कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद की आलोचना करते हुए यह सिद्ध करते है कि प्रेमचंद भारतीय जीवन मूल्यों और महात्मा गाँधी के विचार को ही दर्शाते है। महात्मा गाँधी का विचार भी भारतीयता को अपने अंदर सजोये हुए है–

"वे महात्मा के हृदय –परिवर्तन, ट्रस्टीशिप, अहिंसा तथा मानवीय गुणों के अंत तक समर्थक रहे क्योंकि उसमे उन्हें अपनी भारतीय परम्परा और अस्मिता का रूप दिखाई देता था।"[18]

कमल किशोर गोयनका प्रेमचंद को दलित साहित्य का पहला कहानीकार मानते है। वह प्रेमचंद के दलित चेतना की कहानी पर महात्मा गाँधी के प्रभाव से पहले विवेकानंद और दयानन्द सरस्वती का प्रभाव मानते है। महात्मा गाँधी के भारत आने से पूर्व ही प्रेमचंद ने कई कहानियाँ ऐसी लिखी जिसमे दलित चेतना उजागर होती है। 'दोनों तरफ से' और 'सिर्फ एक आवाज' रचना में दलितों के अधिकार और उनसे छुआछूत खत्म करने का आग्रह है। कमल किशोर गोयनका अपने लेख 'प्रेमचंद का दलित विमर्श' में लिखते है–

"स्वामी दयानन्द और विवेकानंद ने दलितोत्थान को युग–धर्म से जोड़ दिया था और प्रेमचंद ने अपने साहित्य–धर्म एवं राष्ट्र–धर्म में अंतर्भूत करके दलितों की चुप्पी को तोड़कर उसे बुलंद आवाज में बदल दिया और स्वराज्य के लिए दलित–विमर्श को एक अनिवार्य विमर्श बना दिया।"[19]

कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचंद के प्रवासी जीवन पर आधारित कहानी 'शूद्रा' को हिंदी साहित्य का पहला प्रवासी साहित्य माना। इसमें 'गौरा' और 'मंगरु' के प्रवास में होने वाली दुर्गति का चित्रण है। वही प्रेमचंद ने शलिव इन रिलेशनशिपश पर लिखी अपनी शमिस पद्माश कहानी में इसके होने वाले दुष्परिणामों का जिक्र किया है। कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद के साहित्य को विविधताओं में देखते है, जिसमे अहिंसा, देश–प्रेम, त्याग का चित्र प्रस्तुत होता है। जहाँ मनुष्य सभी आपसी–भेद मिटाकर एक समन्वय स्थापित करने की चेष्टा करते है, जो भारतीयता और इसकी संस्कृति को स्पष्ट करती है।

निष्कर्ष

कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचंद की आलोचना का आधार भारतीयता को ही माना है। यह भारतीयता किसी पंथ विशेष न होकर मानवता को ही प्राथमिकता देती है। प्रेमचंद के साहित्य का अध्ययन करने पर भी यही निष्कर्ष निकलता है कि प्रेमचंद अपने साहित्य में मानवता को ही केंद्र में रखते है। कमल किशोर गोयनका द्वारा प्रेमचंद पर किया गया आलोचानात्मक कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वह ऐसे पहले आलोचक है, जिन्होंने प्रेमचंद को भारतीयता की दृष्टि से देखने का विचार सूत्र अपनी आलोचना में दिया। कमल किशोर गोयनका द्वारा प्रेमचंद के साहित्य में भारतीयता को ढूँढना प्रेमचंद के वास्तविक साहित्य से परिचय कराना है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद नयी दृष्टि ;नये निष्कर्ष, भूमिका से, नयी किताब प्रकाशन, प्रथम संस्करन –2020, पृष्ठ संख्या–4
2. वही, पृष्ठ–210
3. तुलसीदास, 'श्रीरामचरितमानस', तुलसीदास, टीकाकार, हनुमान प्रसाद, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण, 2022, उत्तरकाण्ड / 22 / 4, पृष्ठ संख्या– 932
4. कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद नयी दृष्टि ;नये निष्कर्ष, नयी किताब प्रकाशन, प्रथम संस्करन –2020, पृष्ठ संख्या– 211
5. कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प विधान, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1974, पृष्ठ संख्या– 373
6. वही, पृष्ठ–182
7. वही, पृष्ठ–224
8. स्वामी अड़गड़ानन्दजी, यथार्थ गीता, परमहंस आश्रम, दूसरा अध्याय, श्लोक संख्या–47
9. समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका, संपादक चंद्रशेखर कंबार, जुलाई–अगस्त, 2020, पृष्ठ– 24
10. तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, टीकाकार, हनुमान प्रसाद, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण, 2022, उत्तरकाण्ड / 121 / 11, पृष्ठ संख्या, 1034
11. शोध दिशा, अंक 50, पृष्ठ संख्या– 258
12. प्रेमचंद कहानी रचनावली, संपा. कमल किशोर गोयनका, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010, खंड–1, पृष्ठ–479
13. कमल किशोर गोयनका, मदन गोपाल रूप्रेमचंद के खोजी विशेषज्ञ और जीवनीकार, संपादक दृगिरिराजशरण अग्रवाल, शोध दिशा, अंक –26, पृ –17,
14. प्रेमचंद, कमल किशोर गोयनका, साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण–2013, पृ –57,
15. कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद नयी दृष्टि; नये निष्कर्ष, नयी किताब प्रकाशन ,प्रथम संस्करण –2020, पृष्ठ संख्या– 330
16. वही, पृष्ठ–331
17. 17. कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद, पृ –57, साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण–2013, पृष्ठ–58
18. कमल किशोर गोयनका, साहित्य कर्म और श्राष्ट्रीय स्वश की अवधारणा, संपादक– नंदकिशोर पांडेय, भावक पत्रिका, जन. 2019, पृ –8
19. कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद का दलित विमर्श, संपादक –अशोक मिश्र, बहुवचन अंक–42, पृ –22